Online

Solo Show

Drawings and Paintings

Ragini Sinha

8-23 March, 2021

8th March to 23rd March 2021

Organized by

COLOR N SPACE ARTIST STUDIO

Supported by

URNANTAGA

AND

YELLOWGREEN

Rajesh Chand

Curator

उड़ान रंगों की

Rajesh Chand
Curator

रंग उड़ने-उड़ाने की जब बात होती है तो अनायास ही होली का त्यौहार नज़रों के सामने अठखेलियां करने लगता है। इन दिनों होली का त्यौहार करीब है तो ऐसे में रंगों की बात करना जायज़ भी है। भावनाओं की उड़ान अगर शबाब पर हो तो रंगों को धागों में बांध कर खुले आसमान में उड़ाने का एहसास ही किसी कलाकार को पतंग विषय पर काम करने को प्रेरित कर सकता है।

ऐसी ही एक वरिष्ठ कलाकार हैं रागिनी सिन्हा। रागिनी जी को मैं लगभग 30 वर्षों से करीब से जनता हूँ। उनका कला जीवन इससे भी वर्षों पुराना है। मैने उनकी मशरूम श्रृंखला के चित्रों को भी देखा है। अब नए श्रंखला के साथ सफ़ेद कैनवास पर पतंग और रंगों की अठखेलियां वाकई कलाकार को सुखद एहसास देता होगा। पतंग पर बारीक़ लकीरों से मधुबनी चित्र की आभासी रचना पतंग के धागों सी प्रतीत होती है जो उनके चित्रों को एक नया आकर्षण प्रदान करती है।

8 मार्च से 23 मार्च तक रागिनी जी की एकल प्रदर्शनी का आयोजन करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। संभवतः यह उनकी प्रथम ऑनलाइन एकल प्रदर्शनी है। मुझे पूरी उम्मीद है उनकी कृतियाँ दर्शकों को आकर्षित करेंगी। हम अपने सहयोगी "Urbantaga" और "Yellowgreen" के आभारी हैं।

धन्यवाद्

रंग रेखाओं की पतंगबाज़ी

सुमन कुमार सिंह
कलाकार/ कला लेखक

पतंग और उसके चित्रण के इतिहास की बात करें तो ईशा पूर्व लगभग 9 हज़ार साल पुराना विवरण हमें मिलता है। वर्तमान इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप की मुना गुफा की दीवारों से। अलबत्ता वर्तमान पतंग बाज़ी या पतंग के निर्माण के श्रेय की बात करें तो इसके लिए कागज़ का प्रयोग पहले पहल चीन में होने का विवरण उपलब्ध है। यह मामला छठी सदी के आसपास का है, जब चीन में पतंगों के जरिये दूरी नापने के अलावा संदेशों का आदान प्रदान किया जाने लगा था। बहरहाल अपने देश भारत में इसके आगमन का कोई स्पष्ट विवरण भले ही उपलब्ध नहीं हो, लेकिन कुछ खास अवसरों पर पतंगबाज़ी किसी ना किसी रूप में देश के हर हिस्से में लोकप्रिय है। दिल्ली और आसपास की बात करें तो मकर संक्रांति जैसे अवसरों पर आज भी जमकर पतंगबाज़ी देखने को मिल ही जाता है। कतिपय इन्हीं कारणों से इसकी आकृति या कहें कि इसके फॉर्म और संयोजन ने समकालीन कलाकारों को भी आकृष्ट किया है, ऐसी ही एक कलाकार हैं रागिनी सिन्हा। लगभग पिछले दो दशक से रागिनी के कैनवास पर पतंगों की अटखेलियां कला प्रेमियों को लुभा रही है।

रागिनी सिन्हा कला एवं शिल्प महाविद्यालय, पटना की कला स्नातक हैं। छात्र जीवन से कला प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों में भागीदारी निभाती आ रही रागिनी इन दिनों दिल्ली एनसीआर में रह रही हैं। नब्बे के दशक के बिहार के कला परिदृश्य से परिचित लोग जानते हैं कि तब इस कला महाविद्यालय के छात्रों के बीच आधुनिक कला के प्रति रुझान दिखने तो लगा था। किन्तु कला आयोजनों के लिहाज़ से उसे बिहार की आधुनिक कला के प्रारंभिक चरण के तौर पर ही रेखांकित किया जा सकता है। अलबत्ता बीरेश्वर भट्टाचार्जी जैसे शिक्षकों और स्थानीय कलाकारों की पहल से कला के छात्रों की रूचि अकादमिक विषयों से इतर चित्रण की होने लगी थी। परिणाम यह हुआ कि छात्र कलाकारों ने मिलकर विभिन्न ऐसे कला समूहों का गठन किया जिसके माध्यम से कला प्रदर्शनियां आयोजित होने लगी। इन छात्र कलाकारों के उत्साह को इसी बात से समझा जा सकता है कि शहर में किसी स्थायी कला दीर्घा के अभाव को दरकिनार करते हुए नुक्कड़ को कला दीर्घा में तब्दील कर डाला।

रागिनी भी उन छात्र कलाकारों में से एक रहीं, और कॉलेज के दिनों से लेकर आजतक यानि लगभग विगत चालीस वर्षों से उनकी कला यात्रा अनवरत जारी है। चित्र रचना के लिए विषयों या आकृतियों की बात करें तो शुरुआती दिनों में उनके कैनवास पर जानवरों का संयोजन दिखता है, वहीँ उसके बाद मशरूम की आकृति और आज उनका कैनवास पतंगों से आवृत रहता है। रागिनी कला में महिला व पुरुष कलाकार के वर्गीकरण की पक्षधर नहीं हैं। वहीँ उनका यह भी मानना है कि सिर्फ कला महाविद्यालय से शिक्षित या प्रशिक्षित होना इस बात की गारंटी नहीं है कि आप कलाकार या सर्जक हैं। कोई भी व्यक्ति जिसमें सृजन क्षमता है वह कलाकार हो सकता है, बशर्ते कि उसके अंदर एक सम्यक कला दृष्टि हो और साथ ही अपने को अभिव्यक्त करने की क्षमता।

बात अगर इनके वर्तमान चित्र प्रदर्शनी की करें तो इसमें उनके हालिया ड्रॉइंग्स शामिल हैं। इन कलाकृतियों की रचना के पीछे उस बाध्यकारी लॉकडाउन की पृष्ठभूमि है, जिसके कारण लोग अपने घरों में कैद होकर रह गए। ऐसे में किसी कलाकार के लिए समय के सदुपयोग का जरिया चित्र रचना से बेहतर कुछ और नहीं हो सकता था। रागिनी ने भी कुछ यही किया और इसमें रचे गए चित्र हमारे सामने हैं, जो हैं तो ड्रॉइंग्स या रेखांकन ही किन्तु कहीं कहीं ऐक्रेलिक रंगों का भी प्रयोग किया गया है। वैसे देखा जाए तो आज की समकालीन कला में माध्यम की सीमा, प्रकृति या अन्य किसी तरह की विभाजन रेखा बेमानी हो चुकी है। आज कला में प्राथमिकता सम्प्रेषणीयता या अभिव्यक्ति की है, जिसके लिए ड्रॉइंग्स, पेंटिंग्स, मूर्तिशिल्प व संस्थापन यहाँ तक की ऑडियो वीडियो प्रस्तुतीकरण से भी गुरेज़ नहीं है। तो रागिनी ने लॉकडाउन के दौरान महसूस किया कि इस आपदा ने देखते देखते प्रकृति और परिवेश को कुछ या थोड़े समय के लिए बदलकर रख दिया। जहाँ एक तरफ आसमान पहले से कहीं ज्यादा नीला और साफ दिखने लगा वहीँ दूर की दृश्यावलियां भी पहले से कहीं ज्यादा स्पष्ट नज़र आने लगी। और तो और एक तरफ जहाँ आम इंसान उड़ते पतंग की बजाय कटी पतंग बनकर रह गया, वहीँ हिरन और बारहसिंघा जैसे पशु महानगर की सड़कों पर बेख़ौफ़ विचरने लगे। प्रकृति, मानव व जीव जंतुओं के सहअस्तित्व की यह बानगी आह्लादकारी तो थी, किन्तु दूसरी तरफ मनुष्य की बेचारगी और बेबसी भी इस बीच सामने आ चुकी थी।

रागिनी के इन रेखांकनों में यह दृश्य बिम्ब कितनी सफलता से रूपायित हो पाया है, इसे तय करने की ज़िम्मेदारी तो आप सुधि कला प्रेमियों की ही रहेगी। किन्तु रागिनी का यह सृजन संसार खुले आसमान में परवाज़ के मनुष्य की उस आदिम चाहत को बखूबी रूपायित करता है, इतना तो कहा ही जा सकता है।

My painting "UDAAN: A Voyage" is the symbol of journey to high space through subconscious aspects of inner values. I am always involving my mind through a flight to the spiritual space of creation. As an artist, I have come to love freedom – freedom of which the kite is a dynamic symbol in my creation.And I have been painting kites for a long time and been experimenting with their imagery value, both in terms of form and color. And since my concept of the kite is more or less philosophical, I have beenmoving into abstractionism from early realism.

Ragini Sinha

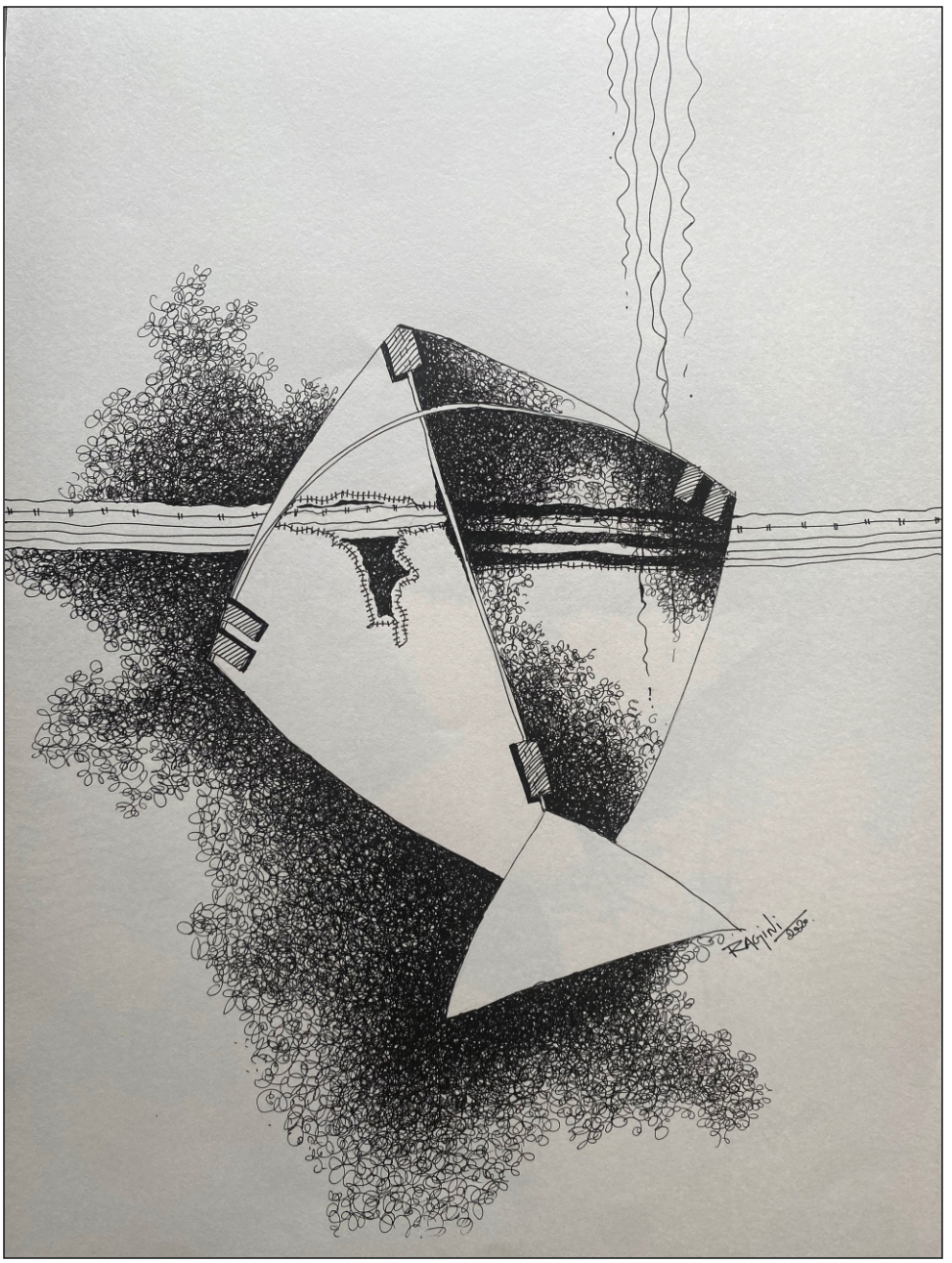

UDAAN- 1 | PEN ON ACID FREE PAPER | 11.5 x 16.5 INCH

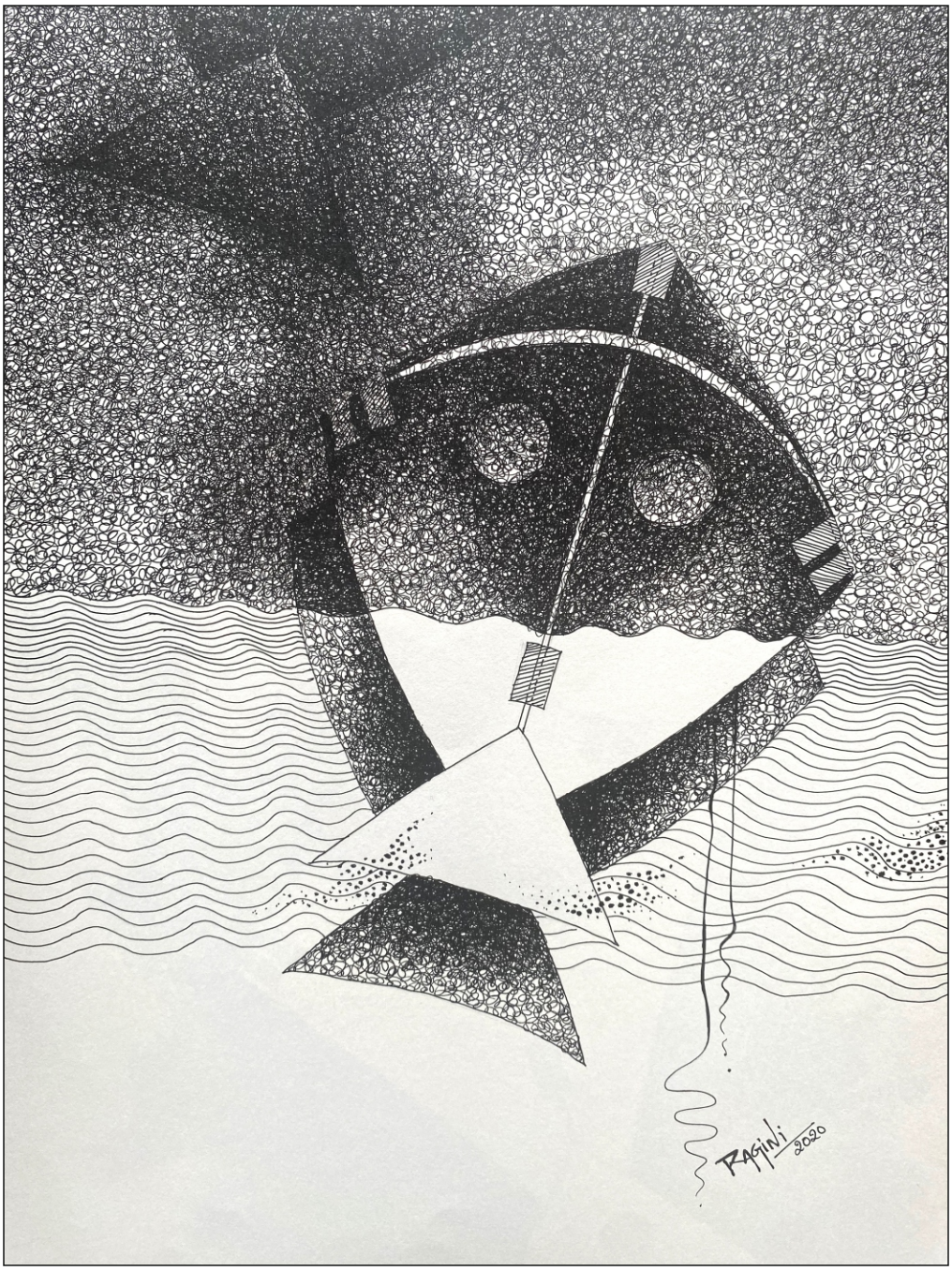

UDAAN- 2 | PEN ON ACID FREE PAPER | 11.5 x 16.5 INCH

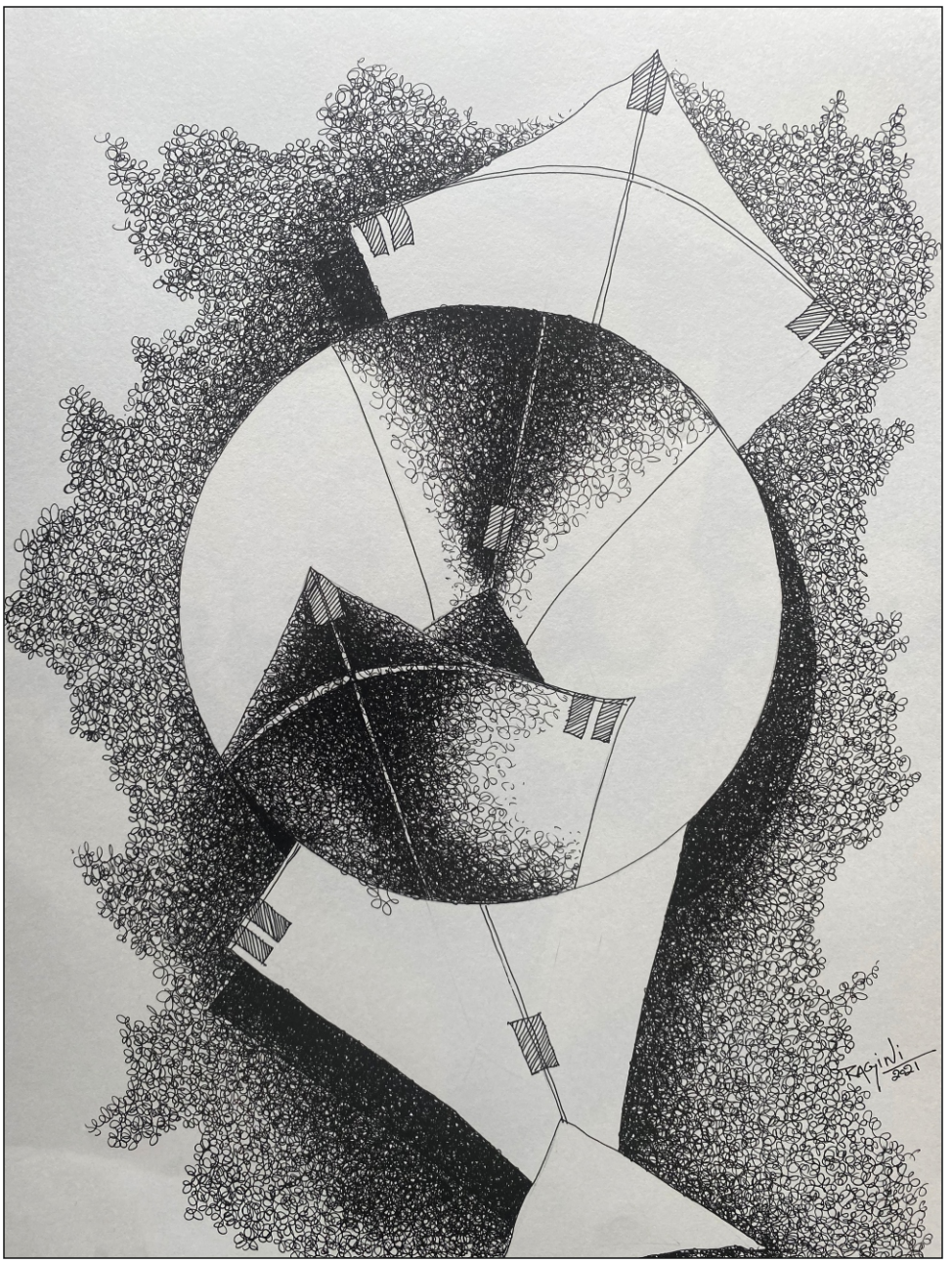

UDAAN- 3 | PEN ON ACID FREE PAPER | 11.5 x 16.5 INCH

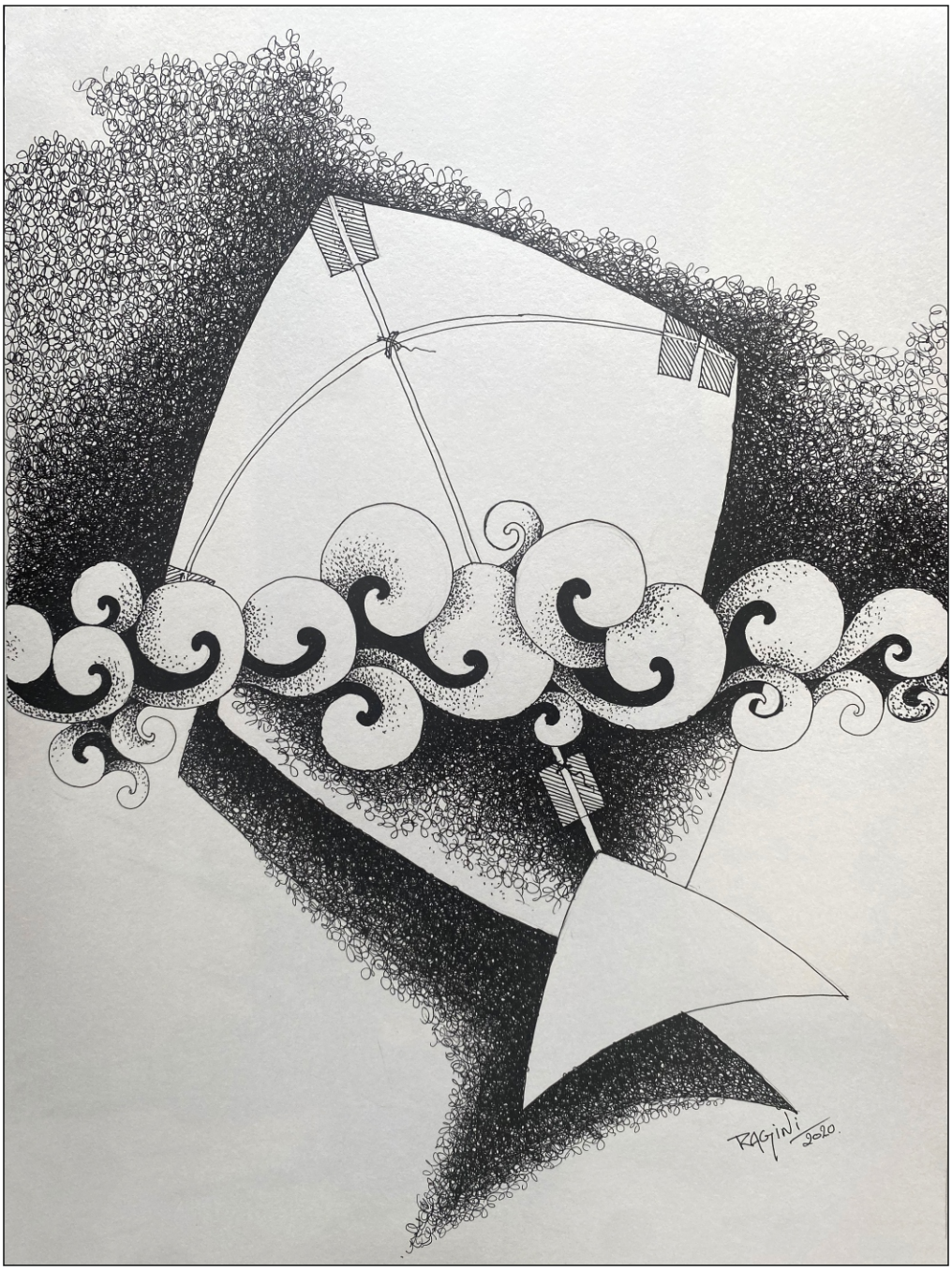

UDAAN- 4 | PEN ON ACID FREE PAPER | 11.5 x 16.5 INCH

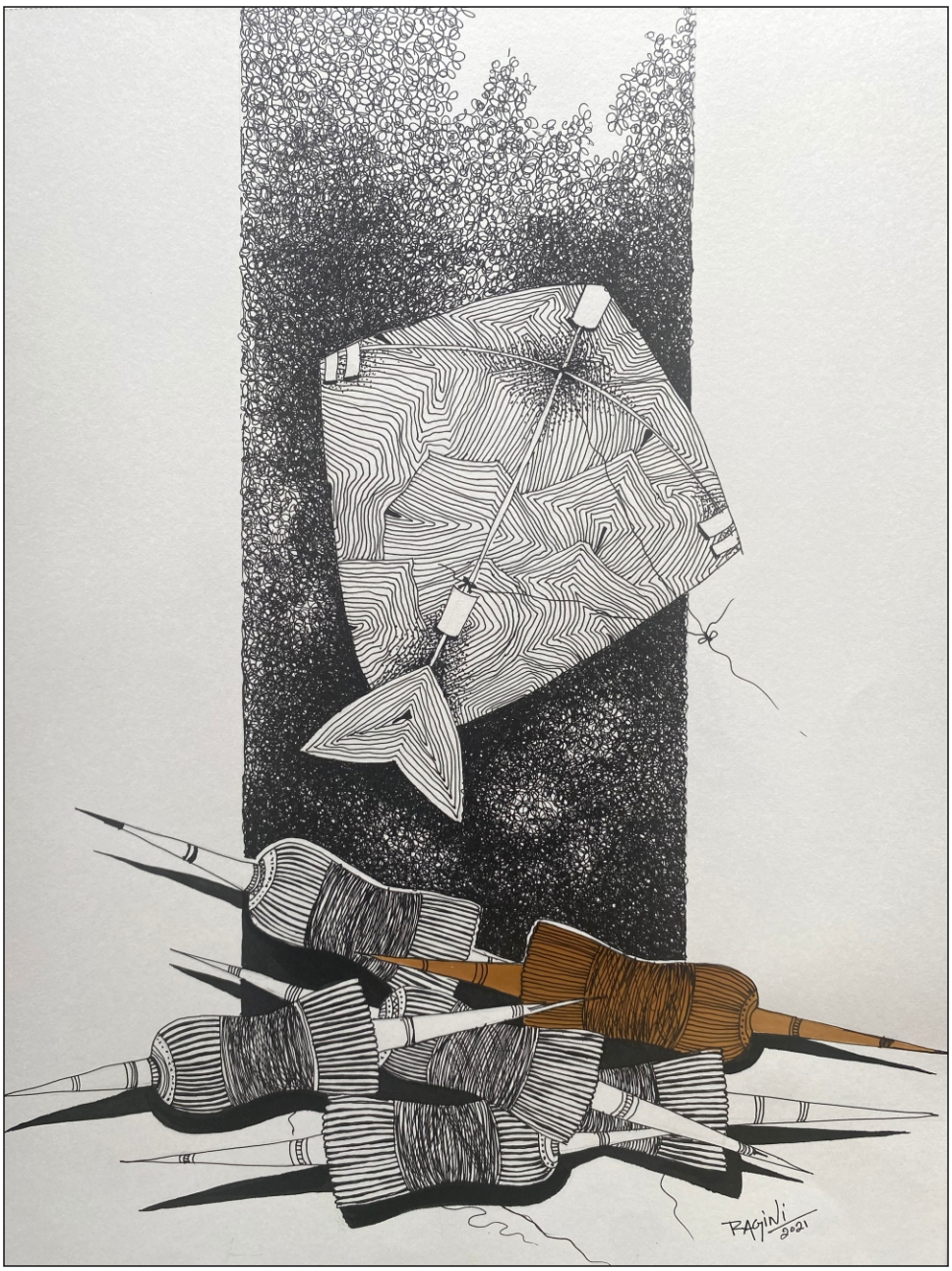

UDAAN- 5 | PEN AND ACRYLIC ON ACID FREE PAPER | 11.5 x 16.5 INCH

UDAAN- 6 | ACRYLIC & PEN ON ACRYLIC PAPER | 9 X 12 INCH

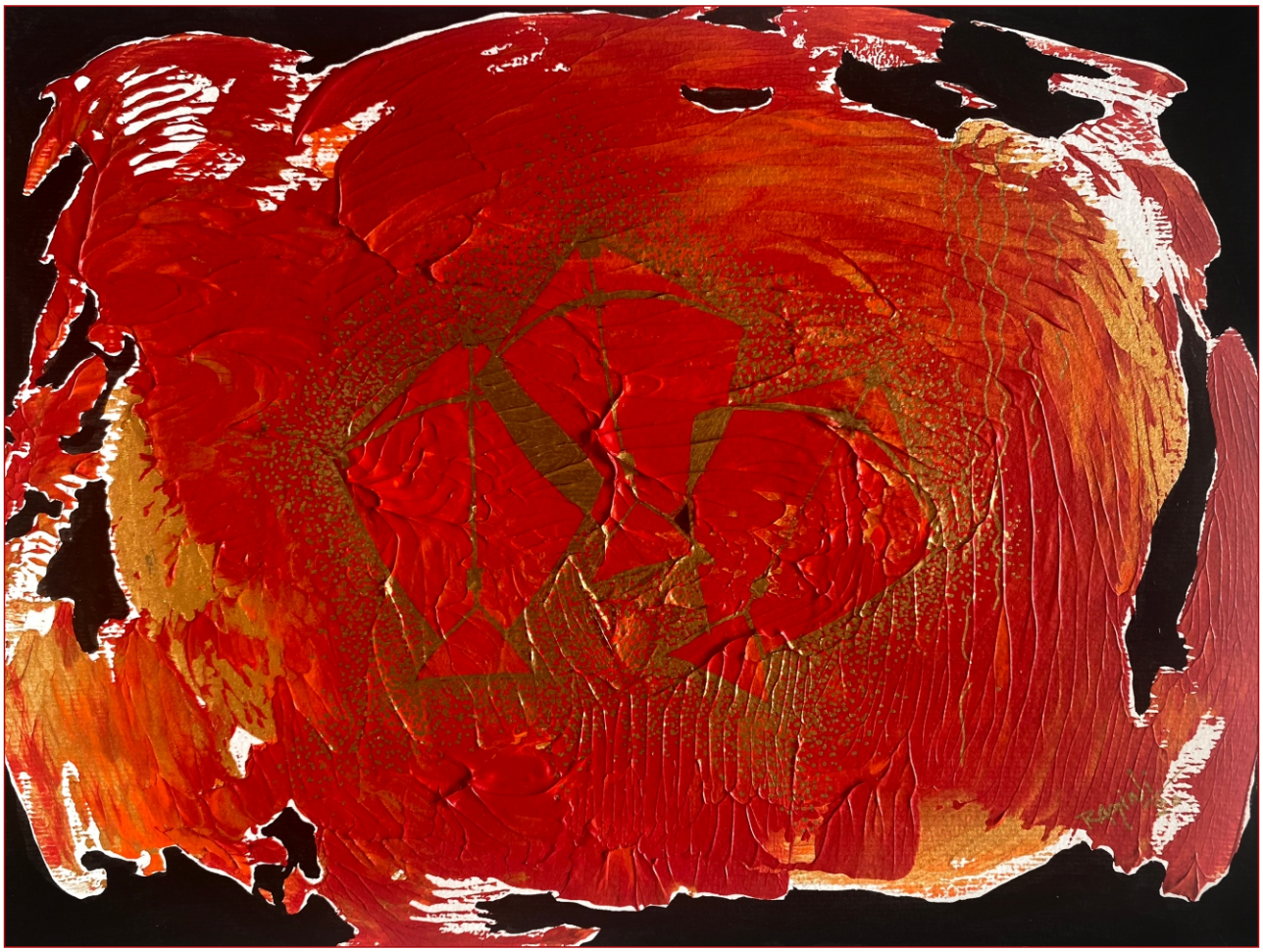

UDAAN- 7 | ACRYLIC & PEN ON ACRYLIC PAPER | 9 X 12 INCH

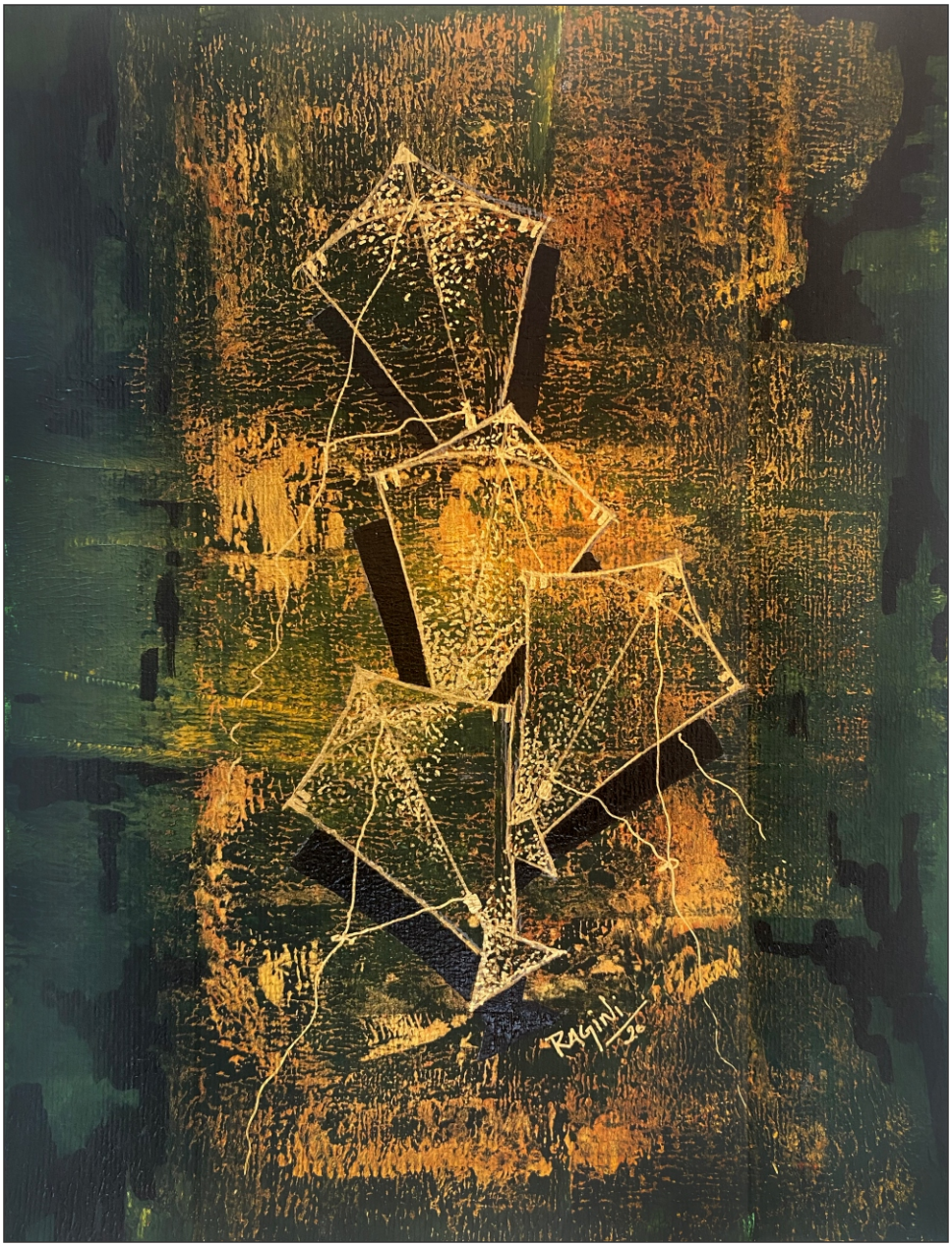

UDAAN- 8 | ACRYLIC & PEN ON ACRYLIC PAPER | 9 X 12 INCH

UDAAN- 9 | ACRYLIC & PEN ON ACRYLIC PAPER | 9 X 12 INCH

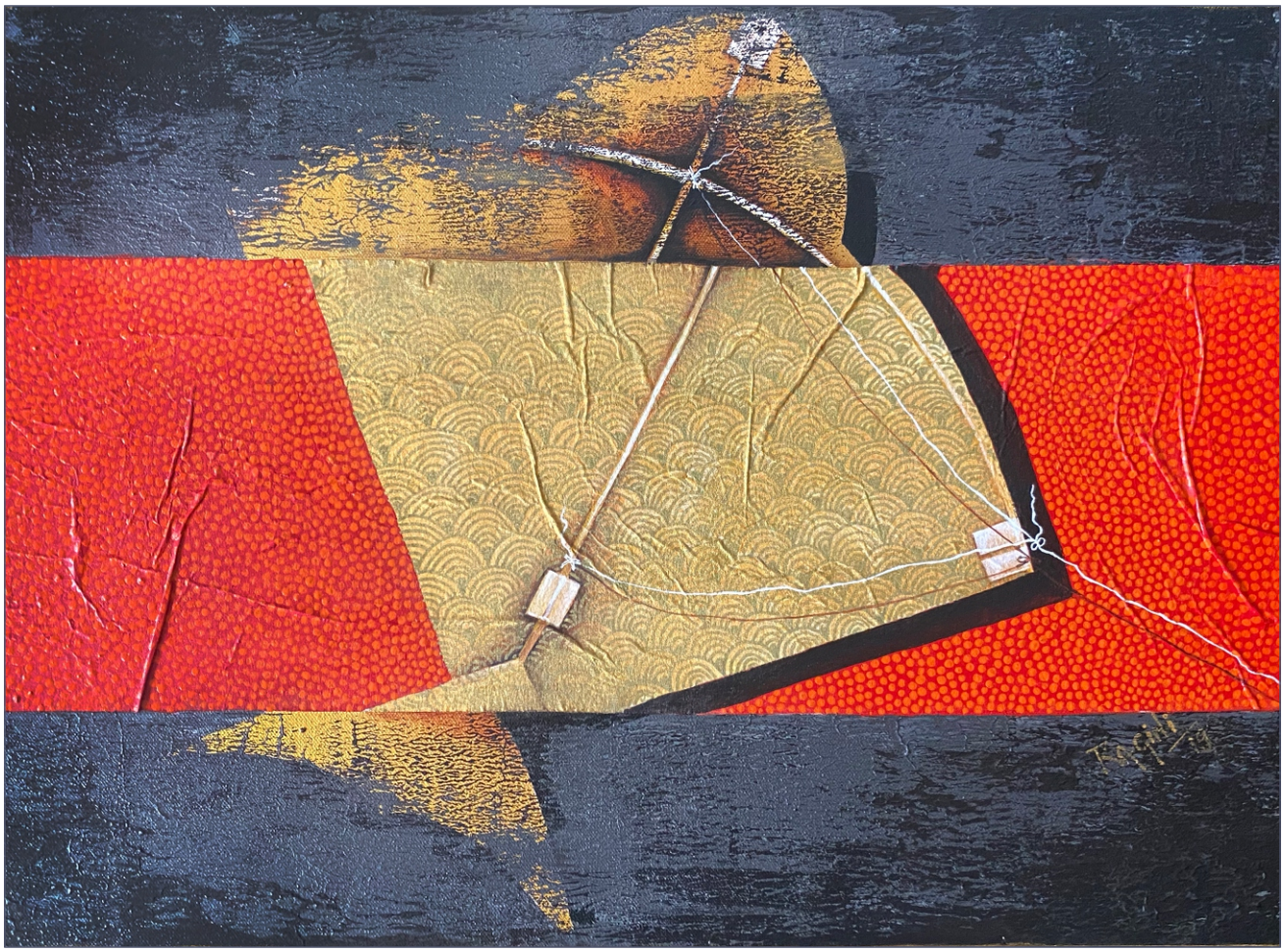

UDAAN- 10 | MIX MEDIA ON CANVAS | 18 X 24 INCH

UDAAN- 11 | MIX MEDIA ON PAPER | 14 X 20.5 INCH

UDAAN- 12 | MIX MEDIA ON PAPER | 14 X 20.5 INCH

UDAAN- 21 | MIX MEDIA ON PAPER | 14 X 20.5 INCH

UDAAN- 13 | MIX MEDIA ON PAPER | 12 X 60 INCH

UDAAN- 14 / 15 | MIX MEDIA ON PAPER | 12 X 60 INCH

UDAAN- 16 | ACRYLIC, PEN ON CANVAS | 12 X 12 INCH

UDAAN- 17 | ACRYLIC, PEN ON CANVAS | 12 X 12 INCH

UDAAN- 18 | ACRYLIC, PEN ON CANVAS | 12 X 12 INCH

UDAAN- 19 | ACRYLIC, PEN ON CANVAS | 12 X 12 INCH

UDAAN- 20 | ACRYLIC, PEN ON CANVAS | 12 X 12 INCH

Organized by

Color N Space Artist Studio

Supported by

Urnantaga

and

Yellowgreen

Design by: Rajesh Chand

WWW.COLORNSPACE.IN